अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः।
स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसंकरः।।४०।।

अधर्म=अधर्म के; **अभिभवात्**=बढ़ जाने से; **कृष्ण**=हे कृष्ण; **प्रदुष्यन्ति**=दूषित हो जाती हैं; **कुलस्त्रियः**=कुल की स्त्रियाँ; **स्त्रीषु**=स्त्रियों में; **दुष्टासु**=दोष होने से; **वार्ष्णेय**=हे वृष्णिवंशी; **जायते**=उत्पन्न होती हैं; **वर्णसंकरः**=अवाञ्छित सन्तान।

अनुवाद

हे कृष्ण! कुल में अधर्म के बढ़ जाने पर कुल की स्त्रियाँ भी दूषित हो जाती हैं। हे वृष्णिवंशी! इस प्रकार स्त्रियों के पतन से वर्णसंकर की उत्पत्ति होती है।।४०।।

तात्पर्य

मानव-समाज में शान्ति, वैभव तथा परमार्थ का प्रधान आधार सदाचारी सन्तान है। वर्णाश्रम-धर्म का इस प्रकार प्रणयन किया गया है जिससे कि भगवत्प्राप्ति के पथ में राज्य एवं समाज की उन्नति के लिए समाज में सदाचारी सन्तान का प्राधान्य रहे। ऐसी सन्तान का प्रादुर्भाव स्त्रीवर्ग के सतीत्व तथा निष्ठा पर निर्भर करता है। जिस प्रकार बालक सुगमता से कुमार्ग पर चले जाते हैं, उसी भाँति स्त्रियाँ भी अत्यधिक पतनोन्मुखी होती हैं। अतः बालकों और स्त्रियों दोनों को कुल के वृद्धों का संरक्षण अपेक्षित है। विविध धार्मिक कृत्यों में संलग्न स्त्रियाँ उपपतित्व के भ्रष्ट-पथ के उन्मुख नहीं होंगी। चाणक्य पंडित के अनुसार स्त्रियाँ प्रायः अल्पज्ञ होती हैं, इसलिए उन पर अधिक विश्वास नहीं करना चाहिए। उन्हें धार्मिक कृत्यरूप कुलधर्मों में ही नित्य संलग्न रहना चाहिए। इस प्रकार उनकी भक्ति तथा सतीत्व से वर्णाश्रम-धर्म के योग्य सदाचारी सन्तान की उत्पत्ति होगी। वर्णाश्रम-धर्म के विनाश से स्त्रियाँ स्वभावतः पराए पुरुषों से सम्बन्ध रखने में स्वतन्त्र हो जाती हैं। इस व्यभिचार से वर्णसंकर की उत्पत्ति होती है। दायित्त्वशून्य व्यक्ति भी समाज में व्यभिचार को प्रेरित करते हैं और इस प्रकार, अवाँछनीय वर्णसंकर मानवजाति को परिपूरित कर युद्ध, महामारी तथा महाविनाश की विपदा उपस्थित कर देते हैं।

संकरो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च।
पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः।।४१।।

संकरः=ऐसी अवाञ्छित सन्तान; **नरकाय**=नरक में ले जाने के लिए; **एव**=ही (होती है); **कुलघ्नानाम्**=कुलघातियों को; **कुलस्य**=कुल को; **च**=भी; **पतन्ति**=गिर जाते हैं; **पितरः**=पितर; **हि**=भी; **एषाम्**=इनके; **लुप्त-पिण्ड-उदक-क्रियाः**=लोप हुई पिण्डोदक क्रिया वाले।

अनुवाद

वर्णसंकरों की वृद्धि से सम्पूर्ण कुल को और कुलघातियों को भी नरक की प्राप्ति होती है। ऐसे पतित कुलों में पितरों के लिए पिण्डोदक क्रिया का लोप हो जाता है, जिससे उनके पितर भी गिर जाते हैं।।४१।।